

• गीत •

कोकिला साकेत जी सियारामु गाए ।

प्रेम आनन्द जी सुधा वरिषाए ॥

नाम रूप लीलां धाम महिमा प्यारी,

जग में ज़ाहिरु कई सत्संग विहारी ।

साईअ सत्यकथा बुधी केरु न लिंग लाए ॥१॥

वठी प्रीति पूंजी कोकिल वर वटां आई,

परम उदारि अमां ब्रचनि विरहाई ।

युगल सुजसु जगु गाए हुलसाए ॥२॥

रागानुगा भक्ति जी राहिड़ी द्रखारी,

नाते वारे नेह जी साधना सेखारी ।

गरो गंजो गद् गद् थी केशव दे काहे ॥३॥

दर्द भरी दिलिड़ीअ में दिलिबर जो देरो,

रोई-रोई रामु रटे थिये नाथु नेरो ।

पाए पूरो ज्ञानु तबि चेरिड़ो चवाए ॥४॥

मन में महबूब जी आ तिखी तार जहिंखे,  
माया न भुलाए सघे ट्रिन्हीं काल तहिं खे ।  
अमुलु उपदेश इहो बचनि बुधाए ॥५॥

वद्दी शक्ति भक्ति पाए नम्रता धारी,  
इन्हींअ करे अबल जी सिक थी सोभारी ।  
साई अ साराह शिवु शिवा खे सुणाए ॥६॥